

गीता जी की महिमा

प्रत्येक मनुष्य को अपने कल्याण का जन्मसिद्ध अधिकार है। गीता में परमार्थ का सरल रास्ता दिखलाया गया है। गीता भगवान कृष्ण के मुख की वाणी तथा वेदव्यासजी द्वारा लिखित सर्वोपरि भारतीय ग्रंथ है। गीता को कंठस्थ व हृदयस्थ करने से मन को अथाह शांति तथा जीवन के समुचित प्रबंधन की सीख मिलती है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को गीता का अवश्य नित्य अभ्यास करना चाहिए।

गीता ग्रंथ की रचना विक्रम संवत् से पहले लगभग 3000 वर्ष पूर्व की मानी जाती है। यह मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन रविवार को भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निकली हुई दिव्य वाणी है। इसी दिन गीता जयंती के रूप में मनाया जाता है इसके श्रोता अर्जुन तथा संकलनकर्ता महर्षि वेदव्यासजी मुनि तथा लेखक भगवान गणेशजी हैं।

महाभारत के भीष्म पर्व के 25 से 42 अध्याय तक गीता का वर्णन हुआ है। संपूर्ण वेदों का सार उपनिषद् है और उपनिषदों का सार गीता है। गीता एक बहुत ही अलौकिक विचित्र सार्वभौमिक ग्रंथ है। यह श्लोकों के रूप में है, और भगवान की वाणी होने के कारण वेद ऋचाओं के समान मंत्र रूप है। इसकी भाषा सरल होने पर भी आशय गंभीर होने से यह सुत्र रूप से है इसकी महिमा अगाध ओर असीम है। इसमें पारमार्थिक व जीवन उपयोगी पूरी सामग्री मिलती है, चाहे वह किसी भी वर्णाश्रम का व्यक्ति क्यों न हो।

गीता में वास्तविक तत्त्व परमात्मा का ही वर्णन हुआ है। गीता साक्षात् भगवान का हृदय है। सभी धर्म संप्रदाय के लोग इसका आदर करते हैं। यह संपूर्ण शास्त्रों का सार है, जो अपने वर्णाश्रम तथा धर्म को कर्तव्य समझकर निष्काम भाव से अनुष्ठान करता है, वह भगवत् प्राप्ति का अधिकारी हो जाता है। गीता का आश्रय लेकर पाठ करने मात्र से बड़े विचित्र अलौकिक और शांति दायक भाव स्फुरित होते हैं। गीता का तात्पर्य मनुष्य मात्र का कल्याण करना है, गीता का सर्वापरि सिद्धांत "वासुदेव सर्वम्" अर्थात् सब कुछ भगवान ही है। मन में कोई शंका होती है तो गीता का पाठ करते करते समाधान हो जाता है। यह एक प्रासादिक ग्रंथ है। श्री कृष्ण अर्जुन संवाद के रूप में 18 अध्याय जिसमें 700 श्लोक का ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता के नाम से जाना जाता है। गीता जी की पुस्तक भगवत् स्वरूप है। अतः उसका विशेषता से आदर करना चाहिए। गीताजी की पुस्तक को हमेशा शुद्ध स्थान पर ही रखना चाहिए। यहां तक संतों ने यह भी कहा है कि गीताजी की पुस्तक को कभी बाएं हाथ से नहीं पकड़ना चाहिए। हमेशा दाएं हाथ से ही पकड़ना चाहिए। गीता के झूठे व अशुद्ध हाथ नहीं लगाने चाहिए। माता बहनों को भी मासिक धर्म के समय इसको नहीं छूना चाहिए, जो मनुष्य निराभिमानी होकर सरलता पूर्वक गीता की शरण में जाता है, उसको भगवान अपनी शरण में ले लेते हैं व अपना प्रेम प्रदान कर देते हैं।